उद्देश्यों की पूर्ति

इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए यह नितांत आवश्यक है कि पाठ्यक्रम में केवल वही पुस्तकें अनुमोदित की जाएँ जो इन उद्देश्यों के आधार पर लिखी गयी हों। भिन्न-भिन्न कक्षाओं की पुस्तकों में जिस शब्दावली का प्रयोग किया जाए, वह भी इन नियमों पर आधारित होना चाहिए।

उद्देश्यों की पूर्ति की जाँच –

भाषा शिक्षण संबंधी उद्देश्यों की पूर्ति कहाँ तक हुई है, इसकी जाँच के लिए निम्न परीक्षाओं को अपनाया जा सकता है :-

(1) मौखिक परीक्षा – मौखिक परीक्षा में विद्यार्थियों से निम्नलिखित बातें करवाई जा सकती हैं :-

(i) सस्वर वाचन करना
(ii) प्रश्नोत्तर करना
(iii) किसी चित्र का वर्णन करने के लिए कहना।
(iv) विद्यार्थी को परीक्षक से प्रश्न पूछने के लिए कहना।

Teacher's Signature.....

(2) श्रुतिलेख :- परीक्षक किसी अवतरण को स्वर पाचन करेगा और विद्यार्थी उसे लिखेंगे इससे विद्यार्थियों की अक्षर-विन्यास संबंधी अशुद्धियों का निराकरण हो सकता है।

(3) लिखित परीक्षा :- लिखित परीक्षा में निम्न बातें सम्मिलित की जाएगी :-

(i) किसी अवतरण को देख-देखकर सुन्दर अक्षरों में लिखना।

(ii) चित्र का लिखित रूप में वर्णन करना।

(iii) प्रश्नों को लिखित रूप में उत्तर देना।

(iv) रिक्त स्थानों की पूर्ति करना।

(v) व्याख्या करना।

(vi) संक्षेपीकरण करना।

साहित्य का उद्देश्य

(1) ज्ञान प्राप्ति करना।

(2) समाज का विकास करना।
(3) सौन्दर्यानुभूति करना।
(4) उदात्त (अच्छा) भावनाओं का विकास
(5) व्यक्तित्व का विकास करना (सर्वांगीण)
(6) भावी जीवन का विकास
(7) नागरिकता के गुणों का विकास
(8) सांस्कृतिक चेतना का विकास
(9) सृजनात्मक शक्ति का विकास